शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र

'पथिक' खण्ड काव्य

कवि - श्री रामनरेश त्रिपाठी

प्रश्न: 'पथिक' ने प्राकृतिक सौन्दर्य को नारी सौन्दर्य से बढ़ कर माना है, सिद्ध करें।

उत्तर: - हिन्दी साहित्य के महान कवि श्री रामनरेश त्रिपाठी जी ने अपने 'पथिक' खण्ड काव्य में प्रकृति का मनोरम दृश्य उपस्थित किया है। खण्ड काव्य का नायक 'पथिक' का कहना है कि प्रकृति का सौन्दर्य नारी सौन्दर्य से बढ़कर है। उसको सिद्ध करने के लिए भारतीय सौन्दर्य चेतना का मानदण्ड रूप रूढ़ प्रतीकों का बड़ा ही अच्छा संकेत किया गया है। नारी मुख एवं हथेलियों की उपमा कमल से देह की धान की बालियों की विनम्रता से, कमर की सिंह की कमर से, नाभि की कुण्ड से, देहयष्टि की बल्लरी से, स्तन की पर्वत से, गरदन की शंख से, गालों की गुलाब की कलियों से, मुखड़े की चाँद से, होठों की किसलय से, दंतपंक्ति की अनार के दानों से, बोली की कोकिल-स्वर से, नासिका की सुग्गे की नाक से, आँखों की हिरनी की आँखों से, व्यक्तित्व की पताका से, मुस्कान की मोती से और केश-जाल की भ्रमर समूह से दी गयी है। पथिक का कहना है प्राकृतिक उपादानों से नारियों के सौन्दर्य की तुलना की गयी है। ऐसे में नारी का सौन्दर्य प्रकृति के सौन्दर्य से श्रेष्ठ कैसे हो सकता है। पथिक अपनी पत्नी ~~के~~ के सौन्दर्य के सन्दर्भ में कहता है कि तुमलोगों का सौन्दर्य अस्थिर है। जबकि प्रकृति का सौन्दर्य शाश्वत प्रतीत होता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 18/12/20
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र
दिगंत - भाग - 2
गद्य भाग

3. प्रश्न:- "इन सब काम के बदले में मिलता था दो जानवर पीछे फसल के समय पाँच सेर अनाज यानि लगभग ढाई किलो अनाज।" इन पंक्तियों के भाव स्पष्ट करें।

उत्तर:- घर और गौशाला में काम करने के बदले मजदूरों को कुल ढाई किलो अनाज मिलता था। वे घर से गोबर निकालते थे। घर में ईख के सूखे पत्ते बिछाए जाते थे। दस-पन्द्रह दिनों पर पाती बदली जाती थी। जानवरों के गोबर मूत्र को साफ करना पड़ता था। आँटे में भूसी मिलाकर सूखी रोटी अछूतों (चूहड़ों) को मिलती थी। कभी-कभी जूठन भी आँगन की टोकरी में डाल दी जाती थी। ये ही उक्त सेवा की मजदूरी थी।

4. प्रश्न:- "अपनी औकात में रह चूहड़ी। उठा टोकरा दरवाजे से और चलती बन।" ये वाक्य किसने कहा?

उत्तर:- जब लेखक की माँ ने जूठे पत्तलों पर अपने बच्चों के लिए कुछ मिठाइयों और पकवानों के लिए सुखदेव सिंह त्यागी से याचना की तो सुखदेव सिंह ने जूठी पत्तलों से भरी टोकरी की ओर इशारा करके कहा - टोकरी भर के जो जूठन ले जा रही है और ऊपर से बच्चों के लिए खाना भी माँग रही है। अपनी औकात में रह चूहड़ी। टोकरा उठाओ और यहाँ से शीघ्र चली जाओ।

5. प्रश्न:- "हारकर माँ ने मुझे चाचा के साथ भेज दिया" - इसका भाव स्पष्ट करें।

उत्तर:- एक दिन गाँव में किसी सामंत का बैल मर गया। लेखक के घर सूचना आयी। पिता घर पर नहीं थे। मेरी माँ मुझे अपने चाचा के साथ डर के कारण खाल उतारने के लिए भेज देती है। क्योंकि उसे गाँव सामंतों से डर लगता है। विवश होकर माँ स्कूल से बुलवाकर मुझे खाल छिलने के लिए चाचा के साथ भेज दी।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 18/4/20
रा० उ० सं० महा वि० सुलसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री प्रथमखण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

'निर्मला' उपन्यास

लेखक — मुंशी प्रेमचन्द

व्याख्या -

" वह अपना रूप और यौवन उन्हें न दिखाना चाहती थी, क्योंकि वह देखने वाली आँखें न थी। वह उन्हें इन रसों का आस्वादन करने के योग्य ही नहीं समझती थी। कली प्रभात-समीर ही के स्पर्श से खिलती है। दोनों में समान सारल्य है। निर्मला के लिए वह प्रभात समीर कहाँ था।"

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'निर्मला' उपन्यास से ली गई है। इसके लेखक उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द हैं। प्रस्तुत गद्यांश में प्रेमचन्द वृद्ध मुंशी तोताराम से विवाह हो जाने के पश्चात निर्मला की मनःस्थिति का वर्णन कर रहे हैं। मुंशी तोताराम निर्मला के साथ मधुर व्यवहार करते थे। वह भी उनसे मधुर व्यवहार करने लगी थी। वह उनसे शारीरिक सम्बन्ध की इच्छा न रखकर उनके प्रति पिता की श्रद्धा रखती थी क्योंकि वे उसके पिता के उम्र के थे। मुंशी तोताराम की सज-धज का नाटक उसे असहनीय लगता था।

निर्मला में युवतियों की उमंग थी। वह भी साज-श्रृंगार करती और चाहती थी कि उनके यौवन की प्रशंसा हो। परन्तु उसके समक्ष पति रूप में वृद्ध तोताराम थे। आयु का यह अन्तर उसे यौवन का प्रदर्शन करने से रोक देता था। वह चाहती थी कि कोई समवय का युवक उसके सामने हो। जिस प्रकार कली प्रभात के प्रातः समीर के स्पर्श से ही खिलती है, उसी प्रकार निर्मला भी किसी समवय युवक के सामने खिल सकती थी। परन्तु वृद्ध तोताराम की पत्नी के रूप में उसकी सारी उमंगे दब आती थी।

प्रस्तुत गद्यांश में एक युवती के हृदय की अभिलाषाओं का मनोवैज्ञानिक निरूपण हुआ है।

डॉ० देव शरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी। 8/04/20
रा० ३० सं० महावि० मुरवस्का, पूर्णिया